Jain Engineers Society News

Society Registration No. -IND/5887/2001, dtd 20.02.2002 **For Social Cause**

Year : 11 Edition : 7 Indore, 20 July 2012 **Page : 4 Rs. : 12/- (Yearly)**

JES THOUGHT : "It is very easy to defeat someone, but it is very hard to win someone" - John Keats

JES Chairman's message-

My dear Fellow Engineers,

Er. Suresh K Pandya.

Jain Engineer's Society has completed Ten Glorious years since inception. A decade has passed for the Society to engage itself in the philanthropic activities successfully adding several feathers to its baby cap. Throughout India very wide and appreciable response has been received. It is indeed a matter of great satisfaction that during this period spirit of harmony, Cooperation and contagious atmosphere prevailed among all the Chapters and Members.

After very command able and spirited leadership which overtook all the initial hurdles of infant stage of the Society which included personalities like Er Shri Suresh Kasliwal, Er Shri R.K.JAIN (Raneka), Er Shri S.K.Jain (Indorama), and Er Shri Santosh Bandi . In the 11th year, I have been selected to head this JES foundation . As usual, the esteemed opinion, help and cooperation of Er Shri Rajendra Jain is always available. Much has been done, but philanthropic activities have no limits. So much is still to be done.

The time has come when the footprints of JES should be seen more often in the social activities of the city, samaj and nation. Ours may be the squirrel effect, but highly fruitful and impactful. They must go on as usual, with more power, more zeal and more enthusiasm. In time to come, I wish JES to have more important say everywhere in future. Thank you

Indore Chapter activities--

World Environment Day

On World Environment Day, 5th June, JES Indore organized a rally from Krishna Pura momentous chhatris to Rajwada to support the revival of historic Khan River which has been converted in to a Nallah since many years.

This program was arranged jointly with CPERD, another NGO working for environment since many years. Program was attended many dignitaries of Indore including High Court Judge Mr. Anand Mohan Mathur, City Engineer Er. Narendra Surana, Industrialist Er. Rajendra singhji Jain & many other renowned social workers, industrialists & education institutes of Indore. There were around 250 participants including women & kids of JES members.

Many speakers thrown light on the history of Khan River & its current situation. Wonderful suggestions & action plans were presented on how this river can be revived & converted back a pleasant river flowing through the heart of the city. Speakers also talked about how rivers revival will positively impact availability of water, environment, weather etc. for coming generations.

At the end of the program a "Support Letter" was submitted to Mayor of Indore Municipal Corporation Mayor Mr. Krishna Murari Moghe stating that we as a group & individuals can provide any kind of support, right from engineering capabilities to physical efforts in giving a re-birth to this historic river.

Program was supported by all major media including various national newspapers & local news channels. See the coverage of program at

Lecture meeting

On 10th June, JES Indore organized a lecture meeting at Udasin ashram, where Er. Komal Jain talked about "Jain Heritage of South India" through a very hi-tech presentation. Er. Jain travelled across very interior & remote places of south India & has done extensive research on temples there.

This program covered more than 200 photographs of historical Jain temples & their current situation. Program claims & proves that many of the present-day wealthiest temples were Jain temples at one point of time & even today many of the temples are being captured & converted due to lack of attention from Jain community. Program covered the places like Padmanabhan temple, Trupati balaji, temples of Kanyakumari, Pondicherry, Rameshwaram, Irnakulam etc.

Er. Komal requesting Jain communities across India to start paying visits to those remote places to retain the Jain heritage. At the end of the program Er. Jain also provided lots of information related to travel to various places, contact persons there, useful internet links etc.

Er Shailendra Jain Secretary,
Indore Chapter

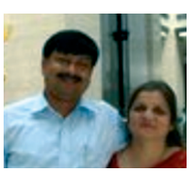

Congratulations-

Congratulations to Dr Anupama Vikas Jain (Rajshree) for earning her PhD on "Transformation of society through Jain way".

With best Compliments from :

ITL INDUSTRIES LTD

111, Sector-B, Sanwer Road, Indore, http://www.itl.co.in

India's leading Metal Cutting Solution Provider and manufacturer of ERW Tube & Pipes Production Equipments.

t॥l Hkkiky pIVj }kjk uenk d fdukj ij o{kkjki.k

''हर मौसम का अपना एक अलग ही आनंद होता है किन्तु सावन के मौसम की तो बात ही निराली होती है'' – वर्षा ॠतु के इस सुहाने अवसर पर नर्मदा नदी के तट पर, भोपाल से लगभग 75 कि.मी.दूर बांद्राभान, शाहगंज के पास माह जून 2012 में स्नेहमिलन आयोजित किया गया,

ft l dk e[; vkd"k.k & (1) नर्मदा के किनारे पर वृक्षारोपण (2) मैंगो फैस्टिवल (3) आई.आई.टी. में चयनित विद्यार्थियों का सम्मान एवं उनके विचार

¼1½ uenk d fdukj ij o{kkjki.k%

प्रतिवर्षानुसार, इस वर्ष भी पर्यावरण के प्रति सजग जैन इंजीनियर्स सोसायटी, भोपाल चेप्टर द्वारा नर्मदा के किनारे पर वृक्षारोपण किया गया। इस कार्यक्रम में सदस्यों के साथ साथ बच्चों ने भी बढ–चढकर, भाग लिया। लगभग 10 विभिन्न प्रजातियों के वृक्षों का वृक्षारोपण किया गया। इस कार्यक्रम की पूर्ण व्यवस्था इसके संयोजक इंजी0 अरूण जैन 'वर्धमान' द्वारा की गई।

¼2½ exks QfLVoy%&

इस कार्यक्रम का आयोजन ग्रुप के सचिव इंजी. अमिताभ मनयां द्वारा बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया। लगभग 7–8 प्रकार की बैरायटी के आमों को बास को टोकरी में लाल पन्नियों के साथ रखा गया तथा आम में राजा रत्नागिरी के हापुस आम (Alphezo) को विशेष रूप से गुलाबों के बीच सजाया गया । यह पूर्ण व्यवस्था इंजी. अमिताभ मनयां एवं उनके परिवार द्वारा उनके ही सौजन्य से बढ़ी आत्मीयता के साथ की गई। इस मैंगो फैस्टिवल (Mango Festival) का उद्‌घाटन क्षेत्र के पूर्व विधायक श्री राजकुमार पटेल द्वारा किया गया। साथ ही उनके द्वारा बांद्राभान क्षेत्र की एवं आस पास के दर्शनीय एवं धार्मिक स्थलों की बहुत ही रोचक जानकारियां भी दी गई।

¼3½ vkb-vkb-Vh- e p;fur fo|kfFk;k d fopkj%&

आई.आई.टी. में चयनित विद्यार्थी श्री अमन जैन पुत्र इंजी. अरूण जैन एवं कु0 अयुषी जैन पुत्री इंजी. अरूण जैन द्वारा यह बताया गया कि अगर आप कोई भी कार्य लगन से एवं सही समय पर करते है तो सफलता अवश्य मिलती है अर्थात यदि आपको 12वीं कक्षा के साथ IIT/PET/AIEEE/PMT/CPMT आदि किसी भी कम्टीटि्व एक्जाम में बैठना है तो उसकी तैयारी कक्षा 9वीं से ही प्रारंभ कर देना चाहिए। कक्षा 9वीं, 10वीं, एवं 11वीं के विषयों की बढ़े अच्छे ढंग से पढ़ाई करना चाहिए तथा विषयों के बैसिक फण्डामेटल क्लियर कर लेना चाहिए। हमने भी यही किया, इस बजह से हमें 12वीं में आई.आई.टी. के एक्जाम हेतु कोई विशेष तैयारी / पढ़ाई नहीं करना पड़ी।

कक्षा 9वीं, 10वीं, एवं 11वीं के विषयों के फण्डामेटल क्लियर करने हेतु हमने हर वर्ष के प्रारंभ में 3 माह की होम ट्यूशन लगाई थी।

ग्रुप के अध्यक्ष इंजी0 शरद सेठी जो कि बी.ई., एमटेक एवं एम.बी.ए. है के द्वारा भी इस संबंध में प्रकाश डाला गया तथा परीक्षा में सफल होने हेतु

fuEu x|: e= fn;s x;s%&

i) क्लास में कल किन किन विषयों के क्या क्या चेप्टर पढ़ाये जाना है, उन चेप्टर को रात में ही एक बार सर–सर–सरी तौर पर अवश्यक पढ़ लेंवे एवं यदि समय कम हो तो मुख्य बिन्दु आवश्य देख लेंवे। इससे क्लास में टीचर द्वारा जब चेप्टर पढ़ाया जा रहा होगा तब वह चेप्टर आपको बिलकुल भी नया नहीं लगेंगा तथा आपका दिमाग खुद–वा–खुद उस चेप्टर को समझने में जिज्ञासा एवं रूचि रखेंगा।

ii) जब आप कॉलेज / स्कूल / क्लास से पढ़ाई कर, घर को आते है तो घर आने पर कुछ समय आराम करें, हल्का फुल्का नास्ता करें, यदि खाने का समय हो तो हल्का फुल्का भोजन लेंवे तदोपरांत क्लास में क्या क्या पढ़ाया गया है उनका रिवीजन करें, वह मुख्य बिन्दुओं के नोट्‌स बनावें ।

iii) जब बच्चे क्लास से घर आते है तब पेरेंट्‌स / भाई बहिन उनका अच्छे से ख्याल करें, पानी लाकर देंवे, उनके साथ कुछ समय बितावें व पढ़ाई की हल्की फुल्की बातें करे।

इन बातों का अगर ध्यान रखा जाये तो सफलता आपके कदम चूमेंगी।

4½ Hkkst u 0;oLFkk%

वर्षा ॠतु के अवसर पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम हेतु चाय–नास्ते एवं भोजन की बहुत ही अच्छी व्यवस्था इंजी. महेन्द्र जैन के शाहगंज में निवासरत् भतीजे श्री मंगल जैन, पारस जैन एवं श्री आनंद जैन (मीकू) द्वारा की ।

5½ lkLdfrd dk;Øe ,o [ksy&dn%

ग्रुप के सदस्य श्रीमती कामनी आर.आर.जैन, श्रीमती मंजू अमलराज जैन, श्री पुष्पेन्द्र जैन, श्री शिखरचंद जैन आदि द्वारा बहुत ही रोचक गेम जैसे– ग्रुप बनाओं इनाम पाओं, पासिंग द पार्सल, पहचानों और पाओं आदि खिलवाये गये। साथ ही हाउजी का भी सदस्यों ने भरपूर आनंद लिया। ग्रुप के सदस्यों ने सुन्दर लॉन पर सर्किल में बैठकर, चुटकुले सुनाये एवं नये पुराने गाने भी गाये गये, जिसमें सदाबहार आवाज के जादूगर इंजी. व्ही.के.जैन 'ज्ञानगंगा' द्वारा महफिल में समा बाध दिया।

6½ ifjogu 0;oLFkk%

भोपाल से बांद्राभान आने जाने के लिए, बहुत ही सुन्दर दो बसों की निःशुल्क व्यवस्था ग्रुप के उपाध्यक्ष इंजी. व्ही.के.जैन 'ज्ञानगंगा एकेडेमी' द्वारा की गई। इसके लिए हम उनके आभारी है।

7½ vkHkkj%

कार्यक्रम के अंत में ग्रुप के अध्यक्ष इंजी. शरद सेठी द्वारा जिन जिन का भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग रहा, कार्यक्रम में सम्मिलित हुये व बढ–चढकर, सहयोग प्रदान किया गया उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त किया गया ।

JES Indore activities-

After serious business of social activities, JES Indore chapter decided to have some fun. This time we decided to watch a movie in traditional talkies where you would see long queues for tickets, listen lots of whistles & funny comments & pleasant noise. Of course there was a reason behind choosing talkies over multiplex, because you cannot enjoy this movie that much in multiplexes with sophisticated gentry. Yes, you guessed it right, the movie was all time hit comedy "Bol Bachhan".

All fellow engineers remembered the good old engineering days where they used to stand in long queues for tickets & then inside the talkies used to make lots of fun. New generation also got chance to see talkies culture. Around 200 members attended the program & of course the food was real "yum".

Program was sponsored by Dr. Anupama Er. Vikas Jain (Rajshree) & Dr. Ajitsinghji Kasliwal on occasion of Anupamaji getting awarded with her PhD degree. JES congratulate Dr. Anupama once again & wish her all the best.

22nd July JES Indore chapter is organizing Pratibha Samman Samaroh for appreciating all the achievements JES members & their families have made in year 2011-12. On the same day JES Indore will also collect the funds for JES Shiksha Sahayog (Scholarship) program. Every year JES Indore chapter collects around Rs. 2 lakhs from members & around 150 unprivileged Jain students gets benefitted out of that.

JITO
(JainInternational Trade Organisation) offers Education Loan

JITO has disbursed Education Loans worth Rs 13,50 Crores at highly subsidized rate to all sects of Jain Students in last two years. For such loans JITO gives Guarantee for repayment to the Banks. For more details visit www.jito.org. JELP Program. This years Target for loan disbursement is much higher than the last years as informed by the JELP Chairman Dr Davish Jain who is Managing Director of famous Prestige Group of Institute Indore.

HR Point of View-

After 2 years of selfless service, a man realized that he has not been promoted, no transfer, no salary increase no commendation and that the Company is not doing anything about it. So he decided to walk up to his HR Manager one morning and after exchanging greetings, he told his HR Manager his observation. The boss looked at him, laughed and asked him to sit down saying; My friend, you have not worked here for even one day. The man was surprised to hear this, but the manager went on to explain.

Manager:- How many days are there in a year?
Man:- 365 days and some times 366
Manager:- how many hours make up a day?
Man:- 24 hours
Manager:- How long do you work in a day?
Man:- 8am to 4pm. i.e. 8 hours a day.
Manager:- So, what fraction of the day do you work in hours?
Man:- (He did some arithmetic and said 8/24 hours i.e. 1/3(one third)
Manager:- That is nice of you! What is one-third of 366 days?
Man:- 122 (1/3x366 = 122 in days)
Manager:- Do you come to work on weekends?
Man:- No sir
Manager:- How many days are there in a year that are weekends?
Man:- 52 Saturdays and 52 Sundays equals to 104 days
Manager:- Thanks for that. If you remove 104 days from 122 days,
how many days do you now have?
Man:- 18 days.
Manager:- OK! I do give you 2 weeks sick leave every year. Now
remove that 14 days from the 18 days left. How many days do you
have remaining?
Man:- 4 days
Manager:- Do you work on New Year day?
Man:- No sir!
Manager:- Do you come to work on workers day?
Man:- No sir!
Manager:- So how many days are left?
Man:- 2 days sir!
Manager:- Do you come to work on the (National holiday)?
Man:- No sir!
Manager:- So how many days are left?
Man:- 1 day sir!
Manager:- Do you work on Christmas day?
Man:- No sir!
Manager:- So how many days are left?
Man:- None sir!
Manager:- So, what are you claiming?
Man:- I have understood, Sir. I did not realise that I was stealing Company money all these days.

Moral - NEVER GO TO HR FOR HELP !!!
HR means HIGH RISK .....

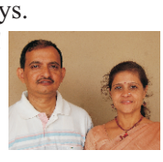

Er. Sandeep Jatale
JES Indore

Dear friends,

We all carry mobile phones with names & number stored in memory but nobody, other than our selves, knows which of these numbers belong to our closet family or friends. If we were to be involved in an accident or were taken ill, the people attending us would have our mobile phone but would not know who to call. Yes there are hundreds of numbers stored but which one is the contact person in case of an 'Emergency? Hence this “ICE” (In Case of Emergency) Campaign. The concept of “ICE” is catching on quickly. It is a method of contact during Emergency situations. As Mobile phones are carried by the majority of the population, all you/we need to do is store the numbers of a contact person or persons who should be contacted during the Emergency under the name “ICE”(In Case of Emergency).The Idea was thought by a paramedic who found that when he went to the scenes of accidents, there were always mobile phones with the injured, but they did not know which number to call. He therefore thought that it would be a great idea if there was a nationally recognized name for this purpose. In case of emergency Service Personnel and Hospital staff would be able to quickly contact the right person by simply dialing the number you have stored as”ICE”.For more than one contact name simply enter/name as ICE1,ICE2,ICE3….. etc.A great idea that will make a difference! Let's spread the concept of ICE by storing an ICE number in our mobile phones today!-

Er Deven Kalyanji Lodaya. Mumbai

स्वास्तिक

स्वास्तिक का अपना एक अस्तित्व है। बगैर स्वास्तिक बनाये पूजा आरंभ नहीं की जाती। वास्तु शास्त्र में चार दिशाएं होती है। स्वास्तिक चारों दिशाओं को बोध कराता है। पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर। चारों दिशाओं के देव पूर्व के इन्द्र, दक्षिण के यम, पश्चिम के वरूण, उत्तर के कुबेर। स्वास्तिक की भुजाएं चारों उप दिशाओं का ज्ञान कराती हैं। ईशान, अग्नि, नैऋत्य, वायव्य। स्वास्तिक के आकार मे आठों दिशाएं गर्भित हैं। वैदिक हिन्दू धर्म के अनुकुल स्वास्तिक को गणपति का स्वरूप माना है।

संप्रदाय वाद के घर में क्या रखा है,
व्यर्थ के मेरे तेरे में क्या रखा है।
रौशनी बुला रही है हृदय से अपनाओ,
पग-पग पर टकराए उस अंधेरे में क्या रखा है।

स्वास्तिक का महत्व सभी धर्मों में बताया गया है। विभिन्न देशों मे अलग-अलग नामों से जाना जाता है। ४ हजार साल पहले सिंधु घाटी की सभ्यताओं में भी स्वास्तिक के निशान मिलते है। बौद्ध धर्म मे स्वास्तिक का आकार गौतम बुद्ध के हृदय स्थल पर दिखाया गया है। मध्य एशिया देशों में स्वास्तिक का निशान मांगलिक एंव सौभाग्य सूचक माना जाता है। नेपाल में हेरंब के नाम से पूजित होते हैं। बर्मा में महा पियेन्ने के नाम से पूजित है। मिश्र में सभी देवताओं के पहले कुमकुम से क्रॉस की आकृति बनाई जाती है। वह एक्टोन के नाम से पूजित है। मेसोपोटेमिया में अस्त्र-शस्त्र पर विजय प्राप्त हेतु स्वास्तिक चिन्ह को ग्रहण किया जाता है। हिटलर ने भी इस स्वास्तिक चिन्ह को ग्रहण किया था। जर्मन के राष्ट्रीयध्वज में स्वास्तिक विराजमान है। क्रिश्चन समुदाय क्रॉस का प्रयोग करते हैं। वह स्वास्तिक का ही रूप है। जैन समुदाय एंव सनातन समुदाय मे स्वास्तिक को मांगलिक स्वरूप माना गया है। जर्मन एंव फ्रांस ने कई यंत्रों का अविष्कार किया है जो हमें ऊर्जाओं की जानकारी देता है। उनमें से यंत्र का नाम बोविस है। इस यंत्र से स्वास्तिक की ऊर्जाओं का अध्ययन किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने उसकी जानकारी विश्व को देने का प्रयास किया है। विधिवत् पूर्ण आकार सहित बनाये गये एक स्वास्तिक में करीब १ लाख बोविस ऊर्जाएं रहती हैं। जानकारियॉ बड़ी अद्भूत एंव आश्चर्यजनक हैं।

स्वास्तिक बनाते समय केसर का उपयोग करें। सिंदूर एंव तेल का मिश्रण का उपयोग करें। सभी भुजाओं का आकार बराबर हो ।

सम्पत कुमार सेठी, आगमोद्धारक

मां से बढ़ कर कोई न दूजा

चीन मे आए भूकम्प के दौरान एक मॉ के त्याग और बलिदान की सच्ची कहानी है यह।

भूकम्प के थमने के बाद जब राहत एंव बचावकर्मी एक बस्ती मे पहुचें तो एक जवान महिला के ध्वस्त मकान तक भी पहॅुचें। टूटी दीवारों की दरारों से उन्हे एक लाश नजर आई। उन्हे इस मृत शरीर की अवस्था कुछ अजीब सी लगी। वह अपने घुटनों पर झूकी हुई थी जैसे पूजा की मुद्रा में हो, शरीर आगे की ओर तथा दोनों हाथ किसी वस्तु पर टिके हुए थे। ध्वस्त मकान के मलबें ने उसकी पीठ एंव माथे को चकनाचूर कर दिया था।

कुछ मुश्किलों से राहत दल के नेता ने दरार में से अपना हाथ डाला और मृत महिला के शरीर को छुआ। उसे महिला के जीवित होने पर शक था, पर वो अपनी तसल्ली करना चाहता था। ठंडे पड़ गए और अकड़े हुए शरीर ने शक की कोई गुंजाईश नही रखी और बचावकर्मी अगले खंडहर की ओर बढ़ने लेगे। क्या मालूम क्या हुआ कि बचाव दल के नेता से रहा न गया और वह पुनः मृत महिला के घर आ गया। वो फिर झुका और दरार में जगह बना कर मृत महिला के शरीर के नीचे की जगह टटोलने लगा। वो एकदम उत्तेजित हो चिल्लाया, श्ओह बच्चा, यहॉ एक बच्चा भी है।श

सारी टीम दौड़ कर आई और सावधानीपुवर्क मलबे की परतों को हटाने लगी। मृत महिला के आसपास की चीजें हटाई गईं तो देखा कि फूलों की डिजाईन वाले एक मखमली कंबल में एक तीन माह का बच्चा लिपटा हुआ था। वो अपनी मॉ के शरीर में छुपा हुआ मिला। निश्चित रूप से मॉ ने अपने बेटे को बचाने के लिए बड़ा बलिदान किया था। जब मकान धाराशाही हो रहा होगा तो उसने अपने शरीर को बच्चे का सुरक्षा–कवच बनाकर मलबे की मार सहन की थी। नतीजा यह हुआ कि राहत दल को बच्चा शांति से सोता हुआ मिला।

डॉक्टरों की टीम ने शिशु की पूरी जॉच की तो उन्हे कंबल में से ही एक मोबाईल जिसकी स्क्रीन पर एक संदेश अंकित था, यदि तुम बच गए तो तुम्हें यह याद रखना है कि मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूॅ।श मोबाईल फोन एक हाथ से दूसरे हाथ में घूमता रहा और बहुत से बचावकर्मी फूट–फूट कर रोने लगें।

तुम्हे यह याद रखना है कि मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूॅ. . . . .श्सिर्फ एक मॉ का ही प्यार इतना सच्चा, इतना निश्चल हो सकता है।

याद रखिए आपसे भी कोई उतना ही प्यार करता है। वक्त रहते उसे समझें क्यूॅकि प्यार की ताकत से, जिन्दगी की कोई भी मुश्किल हो, हल हो ही जाती है।

Courtesy- Swayam Utthan Indore

CAR A/C and CANCER

Now this is very interesting! Car manuals states to roll down the windows to let out all the hot air before turning on the A/C.

WHY ?

No wonder more folks are dying from cancer than ever before. We wonder where this stuff comes from but here is an example that explains a lot of the cancer causing incidents. Many people are in their cars the first thing in the morning, and the last thing at night, 7 days a week.

Car A/C (Air Conditioning)

Please do NOT turn on A/C as soon as you enter the car.

Open the windows after you enter your car, and then turn ON the AC after a couple of minutes.

Here's why: According to research, the car's dashboard, seats, a/c ducts in fact ALL of the plastic objects in your vehicle, emit Benzene, a Cancercausing toxin. A BIG CARCINOGEN. Take the time to observe the smell of heated plastic in your car, when you open it, and BEFORE you start it up. In addition to causing cancer, Benzene poisons your bones, causes anaemia and reduces white blood cells. Prolonged exposure will cause Leukaemia and increases the risk of some cancers. It can also cause miscarriages in pregnant females. Acceptable Benzene level indoors is: 50mg per sq. ft.

A car parked indoors, with windows closed, will contain 400-800 mg of Benzene.

If parked outdoors, under the sun, at a temperature above 60 degrees F, the Benzene level goes up to 2000-4000 mg, 40 times the acceptable level. People who get into the car, keeping the windows closed, will inevitably inhale, in quick succession, excessive amounts of the BENZENE toxin.

Benzene is a toxin that affects your kidneys and liver. What's worse, it is extremely difficult for your body to expel this toxic stuff from your body.

So friends, please open the windows and door of your car - give it some time for the interior to air out -(dispel the deadly stuff) - before you enter the vehicle.

Er Suresh Kasliwal
Indore

इस पत्र में प्रकाशित समस्त लेखों, संकलन एवं विचारों के लिए लेखक/प्रेषक/संकलनकर्ता स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक एवं सम्पादक मण्डल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रव्यवहार के लिए पता– जैन इंजीनियर्स सोसायटी, _m{à{_ 144, H$M]mJ, BÝXm452002 (^mV)
फोन: 0731-3044602 E-mail-jainengineers@eth.net, Website- www.jainengineerssociety.com

BOOK-POST
PRINTED MATTER

RNI : MPBIL/2004/13588
डाक पंजी. क्रं आयडीसी/डिवीजन/1130/2009-12

TO,

If undelivered, please return to :
Jain Engineers' Society,144, Kanchan Bagh, Indore 452001 (M.P.)

Owned & Published by Rajendra Singh Jain From 144, Kanchan Bagh, Indore (M.P.) & Printed by Nirmal Graphics Press, 340, Nayapura, Indore (M.P.)
Editor - Er. Rajendra Singh Jain